

## प्रीलमिस फैक्ट्स : 31 मई, 2018

### वशिव मासिक धर्म स्वच्छता दविस

28 मई को पूरे वशिव में, वशिव मासिक धर्म स्वच्छता दविस (World Menstrual Hygiene Day) के रूप में मनाया गया। आज भी कई स्थान ऐसे हैं जहाँ मासिक धर्म के दौरान लड़कियों को परिवार से अलग-थलग कर दिया जाता है। कहीं मंदिर में प्रवेश वर्जित कर दिया जाता है, तो कहीं रसोईघर में।

- वर्ष 2014 से हर साल 28 मई को वशिव मासिक धर्म स्वच्छता दविस के रूप में मनाया जाता है।
- इसका उद्देश्य समाज में फैली हुई मासिक धर्म संबंधी गलत अवधारणाओं को दूर करना तथा कशोरियों तथा महिलाओं को इस संबंध में सही जानकारी उपलब्ध कराना है।
- WASH यूनाइटेड (water, sanitation, hygiene) द्वारा पहल के हिससे के रूप में मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन (MHM) पर जागरूकता पैदा करने के लिये 400 से अधिक संगठन साझेदार के रूप में काम कर रहे हैं।
- नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में आज भी 62% लड़कियाँ तथा महिलाएँ मासिक धर्म के दौरान कपड़े का इस्तेमाल करती हैं तथा 28% कशोरियाँ तो मासिक धर्म के दौरान स्कूल ही नहीं जाती हैं।
- वशिव स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा कये गए एक सर्वेक्षण के अनुसार, भारत में सभी प्रजनन रोगों में से 70 प्रतिशत के लिये खराब मासिक धर्म, स्वच्छता का कारण माना जाता है।
- केमिकल सेनेटरी पैड (जिस पर बहुत सी महिलाएँ भरोसा करती हैं) को विभिन्न बीमारियों के कारण के रूप में जाना जाता है, जिनमें मधुमेह, एलर्जी और त्वचा प्रतिक्रियाएँ शामिल हैं।

### मेंढक की एक नई प्रजाति

भारतीय प्राणी सर्वेक्षण विभाग (Zoological Survey of India) ने उत्तराखंड के हरदिवार ज़िले के झलमलि झील कंजरवेशन रज़िर्व से मेंढक की एक नई प्रजातिका खोज की है। यह नई प्रजाति फेजेरवेरया वंश की है, इसी के आधार पर इसे 'फेजेरवेरया झलमलिसिस' नाम दिया गया है।

- वशिव भर में फेजेरवेरया वंश के मेंढकों की अभी तक केवल 38 प्रजातियाँ ही पाई जाती थीं, जिनकी संख्या अब बढ़कर 39 हो गई है।
- इसी तरह, भारत में इस वंश के मेंढकों की मात्र 18 प्रजातियाँ ही पाई जाती थीं, अब यह संख्या बढ़कर 19 हो गई है।
- इस वंश के मेंढक भारत में मुख्य रूप से उत्तराखंड और सिकिम में पाए जाते हैं। देश के बाहर यह नेपाल आदि के कुछ क्षेत्रों में भी पाए जाते हैं।
- मेंढक की इस नई प्रजातिका लंबाई 37 से 40 मिलीमीटर के बीच है। इसकी पीठ पर काली धारियाँ हैं और पैरों पर फूल की आकृतिके नशान बने हुए हैं। इसकी चमड़ी का अधिकांश हिस्सा हल्के पीले रंग का है।
- यह नई प्रजाति नमी वाले इलाकों में पाई जाती है। ये पानी में नहीं पाए जाते हैं बल्कि तालाब आदि के किनारों एवं पत्थरों के नीचे पाए जाते हैं।
- इसके अलावा, ये धान के खेतों में भी पाए जाते हैं। धान के खेतों में यह कीड़े-मकोड़ों को खाकर फसल को नुकसान से बचाने का काम करते हैं।

### कश्मीर में ततिली की नई प्रजाति

- भारतीय प्राणी सर्वेक्षण विभाग (Zoological Survey of India) ने कश्मीर में ततिली की एक नई प्रजातिका खोज की है। ततिली की यह नई प्रजातिका यापथमि वंश की है।
- कश्मीर में खोजे जाने के कारण इस प्रजातिका नाम यापथमि कश्मीरेंसिस रखा गया है।
- वशिव भर में, इस वंश की लगभग 100 प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिनकी संख्या अब बढ़कर 101 हो गई है।
- इस नई प्रजातिका लंबाई (वगिस स्पान) 15 से 17.5 मिलीमीटर के बीच है।
- देखने में यह बलिकूल अन्य ततिलियों की तरह ही है, लेकिन अन्य की तुलना में इसकी उड़ने की क्षमता काफी धीमी है।

## गुवाहाटी विश्वविद्यालय में ब्रह्मपुत्र नदी अध्ययन केंद्र

केंद्र सरकार ने ब्रह्मपुत्र नदी के संबंध में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिये एक अध्ययन केंद्र खोलने को मंजूरी प्रदान की है। 28 करोड़ रुपए की लागत से गुवाहाटी विश्वविद्यालय में इस अध्ययन केंद्र को स्थापित किया जाएगा।

- यह अध्ययन केंद्र ब्रह्मपुत्र नदी में बाढ़ के कारणों और इसकी रोकथाम जैसे विषयों पर शोध कार्य करेगा।
- यह केंद्र नदी से संबंधित विभिन्न पहलुओं, जैसे कि- जल विज्ञान, जल मार्ग, पर्यावरण, आपदा, बाढ़ प्रबंधन और जल विद्युत उत्पादन आदि विषयों पर अनुसंधान का अवसर मुहैया कराएगा।
- इस केंद्र की स्थापना की पूरी ज़िम्मेदारी पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय की होगी।

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/prelims-fact-31-05-2018>

